संरक्षक / Patron

प्रो. रजनीश कुमार शुक्ल
माननीय कुलपति, म.गां.अं.हिं.वि., वर्धा
**Prof. Rajaneesh Kumar Shukla**
Hon'ble Vice-Chancellor, MGAHV, Wardha

संयोजक / Convener

प्रो. हनुमानप्रसाद शुक्ल
प्रतिकुलपति
अधिष्ठाता, भाषा विद्यापीठ
अधिष्ठाता, अनुवाद एवं निर्वचन विद्यापीठ
**Prof. H. P. Shukla**
Pro Vice-Chancellor
Dean, School of Language
Dean, School of Translation & Interpretation

सह-संयोजक / Co-Convener

डॉ. राजीव रंजन राय
सहायक प्रोफ़ेसर
प्रवासन एवं डायस्पोरा अध्ययन विभाग
अनुवाद एवं निर्वचन विद्यापीठ
**Dr. Rajeev Ranjan Rai**
Assistant Professor
Department of Migration & Diaspora Studies
School of Translation & Interpretation

आयोजन समिति / Organizing Committee

प्रो. कृपाशंकर चौबे
**Prof. Kripa Shankar Chaubey**
डॉ. सूर्य प्रकाश पाण्डेय
**Dr. Surya Prakash Pandey**
श्री अनिकेत अनिल आंबेकर
**Sh. Aniket Anil Ambekar**

आयोजन सचिव / Organizing Secretary

डॉ. रोमसा शुक्ला
**Dr. Romasa Shukla**

## उप विषय / Sub Themes

- धर्म : एक जीवन पद्धति / Dharm : The Way of Life
- डायस्पोरा : भाषा एवं साहित्य / Language & Literature of Diaspora
- कला एवं विरासत / Art & Heritage
- भारतीय डायस्पोरा के आर्थिक मुद्दे / Economic Issues of Bhartiya Diaspora
- पर्यटन एवं डायस्पोरा / Diaspora Tourism
- जनसंचार / Mass Communication
- समाज कार्य और डायस्पोरा / Social Work and Diaspora
- पैनल डिस्कशन- I उच्च शिक्षा में शोध / Panel Discussion–I (Research in Heigher Education)
- पैनल डिस्कशन- II नीति-निर्माण /Panel Discussion– II Policy Making

शोध-पत्र भेजने की अंतिम तिथि : 15 जून, 2022
शोध-पत्र भेजने के लिए ई-मेल : seminarondiaspora@gmail.com
(नोट : शोध-पत्र हिंदी (शब्द सीमा : 3000, कृतिदेव/यूनिकोड फॉन्ट साइज़ 10)
अथवा अंग्रेजी (Word Limit: 3000, Times New Roman, Font Size 11)
में भेजना का कष्ट करें।)
पंजीकरण लिंक : https://forms.gle/u8t2fh3Spu6UEH6D7

## सहभागिता

ऑफलाइन / ऑनलाइन

ऑनलाइन जुड़ने के लिए लिंक यथासमय अलग से प्रेषित किया जाएगा।

ज्ञान शांति मैत्री


महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय
Mahatma Gandhi Antarrashtriya Hindi Vishwavidyalaya
पोस्ट- हिंदी विश्वविद्यालय, गांधी हिल्स
Post– Hindi Vishwavidyalaya, Gandhi Hills
वर्धा-442001 (महाराष्ट्र) भारत
Wardha– 442001 (Maharashtra) India
वेबसाइट/Website : www.hindivishwa.org
ई-मेल : seminarondiaspora@gmail.com
मोबाइल : +91- 9322948459


ICPR
INDIAN COUNCIL OF PHILOSOPHICAL RESEARCH

Indian Council of Social Science Research

भारतीय दार्शनिक अनुसंधान परिषद् तथा भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद् के सहयोग से

आज़ादी का अमृत महोत्सव

1997 25 2022

ज्ञान शांति मैत्री

## महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा

MAHATMA GANDHI ANTARRASHTRIYA HINDI VISHWAVIDYALAYA,WARDHA

द्वारा आयोजित

# अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी

# INTERNATIONAL SEMINAR

## 05-07 जुलाई, 2022

## भारतीय डायस्पोरा का वैश्विक परिप्रेक्ष्य : जीवन और संस्कृति

## Global Perspective of Bharatiya Diaspora : Life and Culture

## संकल्पना

एक राष्ट्रीय अस्मिता से समृद्ध समूह जब अपनी मूल भूमि से दूर दूसरे भौगोलिक क्षेत्र का स्थायी अधिवासी बनता है तो उसे डायस्पोरा कहा जाता है। डायस्पोरा समूहों को भीषण उत्पीड़न के कारण अपनी धरती छोड़नी पड़ी या मूल भूमि से जबरन विस्थापित होना पड़ा। यहूदी, आर्मेनियाई और अफ्रीकी इसी उत्पीड़ित डायस्पोरा समूह में आते हैं। तिजारती डायस्पोरा की भी एक श्रेणी है, जिसमें चीनी और लेबनानी डायस्पोरा समूह आते हैं। साम्राज्यवाद या उपनिवेशवाद के कारण भी डायस्पोरा समूहों को मूल भूमि से दूसरी जगह स्थानांतरित होना पड़ा। गिरमिटिया मजदूर इसी श्रेणी में आते हैं। दक्षिण-पूर्व एशिया के बाहर सबसे बड़ा डायस्पोरा समूह भारतवंशियों का है। ब्रिटिश शासन काल में मॉरिशस, गुयाना, फीजी और कैरिबियन द्वीपों में भारतवंशियों को रबर और तम्बाकू के बागानों में कठोर परिश्रम के लिए ले जाया गया, जहाँ उन्हें बधुंआ मजदूरी करनी पड़ती थी। डायस्पोरा जिस भी श्रेणी के हों, उन्हें सांस्कृतिक अस्मिता की दुविधा से जूझना पड़ता है।

भारतीय डायस्पोरा की यात्रा चरणबद्ध रही है। पूर्व-ऐतिहासिक काल से आरंभ हुई यह यात्रा प्रतिभा पलायन और उनके आदान-प्रदान के साथ आज भी अहर्निश रूप से जारी है। 2003 से भारत और भारतीय डायस्पोरा के संबंधों में एक नए युग का सूत्रपात हुआ, जब डायस्पोरा के महत्व को सामाजिक और व्यक्तिगत परिधि से परे हटकर पहचाना गया। विश्व पटल पर भारतीय डायस्पोरा द्वारा अर्जित सफलताओं के परिणामस्वरूप आधिकारिक तौर पर उनके साथ जुड़ने की पहल होने लगी। श्री अटल बिहारी वाजपेयी के दूरदर्शी नेतृत्व ने एक उच्च स्तरीय समिति के माध्यम से भारतीय डायस्पोरा के बारे में विस्तृत सर्वेक्षण की योजना बनाई, जो डायस्पोरा मामलों में मील का पत्थर सिद्ध हुआ।

भारत ने अपने डायस्पोरा की अंतर्निहित क्षमता को पहचाना तो उसके बाद प्रवासी भारतीय लोगों का भारतीय स्वभूमि से प्रत्यक्ष संबंध एवं उनकी यात्राओं की संख्या बढ़ने लगी। प्रवासी भारतीय समुदायों द्वारा भी पहल का सकारात्मक उत्तर दिया गया। इन वास्तविकताओं की अनुभूति के परिणामस्वरूप प्रवासी भारतीय लोगों के लिए भारत तथा राज्य सरकारों द्वारा मंत्रालयों और विभिन्न प्रकोष्ठों का गठन किया गया है।

यह संगोष्ठी स्वभूमि के रूप में भारत के साथ उसके डायस्पोरा के जुड़े रहने के ऐतिहासिक महत्व पर केंद्रित नहीं है। भारत सरकार द्वारा प्रवासी भारतीय दिवस के आयोजनों के साथ ही सह-संबंधों के उज्ज्वल भविष्य की ओर एक परिवर्तन दिखाई देने लगा है। 'स्टेट कनेक्ट' के फलस्वरूप भारत और भारतीय डायस्पोरा समुदाय के नजदीक आने के परिणामस्वरूप उनके बीच घनिष्ठ संबंधों का स्वरूप दिखाई दे रहा है। अतीत में भारतीय डायस्पोरा और भारतीय नागरिकों के बीच विश्वास की कमी देखी गई थी। सरकार भारत से बाहर रहने वाले भारतीय मूल के लोगों के लिए एक समर्पित योजना प्रदान करने में सक्षम नहीं थी। भारतीय लोगों के के बीच भी यह आम धारणा थी कि सभी प्रवासी भारतीय समृद्धि में फल-फूल रहे हैं और उन्हें अपने मूल रिश्तेदारों को महंगे उपहारों के साथ उपकृत करना चाहिए। पारस्परिक संपर्क के विभिन्न अवसर उपलब्ध कराने के नए दृष्टिकोण के कारण दोनों पक्षों की ओर से अभूतपूर्व प्रगति देखी जा रही है। भारत इन आगंतुक बुद्धिजीवियों के रूप में अपनी प्रतिभा का स्वागत कर रहा है और इन्हें अपने संवेदनशील संगठनों, कार्यालयों, प्रतिष्ठानों और प्रशिक्षुओं से जोड़ रहा है। भारत द्वारा अपनी संतानों से आंखें मूंदकर केवल श्वेत प्रतिभाओं की तलाश करने के दिन अब समाप्त हो चुके हैं।

लगभग इसी समय डायस्पोरा समुदायों में भी समान या और अधिक महत्वपूर्ण परिवर्तन हुआ है। पर्यटक के रूप में लंबी छुट्टियों पर पारिवारिक यात्रा हेतु प्रवासी भारतीयों के लिए भारत आज एक पसंदीदा स्थल बन गया है। लंबी मंदी के बाद भारत अपने डायस्पोरा के हृदय में एक गौरव के रूप में बस गया है, जहां अपनी प्रवासी प्रतिभा को गले लगाने के लिए परस्पर विश्वास और उचित अवसर उपलब्ध हैं। बदले हुए परिप्रेक्ष्य में डायस्पोरा आज अपनी मातृभूमि से बुलावे की प्रतीक्षा कर रहा है और भारत की सफलता की कहानी में सहभागी बनने के लिए ज्ञान भागीदार, प्रशिक्षक, योगदानकर्ता तथा पेशेवर के रूप में सेवा करने के लिए उत्सुक है। हाल के दिनों में शीर्ष पेशेवरों ने भारतीय कार्यालयों को भलीभांति संभाला है और कार्य संस्कृति में प्रतिस्पर्धात्मक उत्साह के साथ नए विचारों का संचालन किया है।

चाहे अकादमिक हो, विश्वविद्यालय हो, अस्पताल हो, सेवा क्षेत्र हो, तकनीकी क्षेत्र हो, राजनीति हो, न्यायपालिका हो या मीडिया और मनोरंजन हो, भारत प्रवासी भारतीयों के लिए एक गंतव्य बन गया है। प्रवासी भारतीय समुदाय का प्रत्येक व्यक्ति अपनी सांस्कृतिक गठरी के साथ यात्रा करता है। दुनिया भर के भारतवंशी समुदायों को एकजुट रखने में इसकी सबसे प्रभावी भूमिका है। संस्कृति एक मिश्रित घटना है, जिसमें भाषा, साहित्य, फिल्म, भोजन, अनुष्ठान, धार्मिक प्रथाओं, पोशाक और त्योहारों के अपने अंश हैं। इन सांस्कृतिक परंपराओं और प्रथाओं के संरक्षण, प्रसार और प्रचलन में विभिन्न शक्तियों की अपनी भूमिकाएं हैं। इन्हीं परंपराओं और प्रथाओं से सांस्कृतिक पहचान बनती है। डायस्पोरा जीवन के बहु-प्रकार्यात्मक पहलुओं में इनकी मुख्य भूमिका होती है। भारतीय डायस्पोरा के जीवन में भारतीय सांस्कृतिक परंपराएं समृद्ध रूप में रची-बसी हैं। इन सांस्कृतिक प्रथाओं के अध्ययन के लिए द्वारा विभिन्न सिद्धांतों, प्रवृत्तियों एवं दर्शन को विकसित किये जाने की आवश्यकता है।

पहचान निर्माण एक बहुआयामी प्रक्रिया है, जिसका गठन एक सामाजिक-ऐतिहासिक संदर्भ में होता है। डायस्पोरा के संदर्भ में एक विशेष सांस्कृतिक समूह से संबद्ध होने की सामुदायिक भावना महत्त्वपूर्ण होती है। यद्यपि अपनेपन की भावना अदृश्य बनी रहती है, लेकिन 'मैं कौन हूं' के प्रश्न पर उभरकर सामने आती है।

प्रस्तावित संगोष्ठी एक ऐसा अवसर प्रदान करेगी, जहां भारतीय संस्कृति की विरासत को ध्यान में रखते हुए प्रवासी पहचान की सामाजिक-ऐतिहासिक जड़ों की पुनर्व्याख्या की जा सकेगी। इसके अतिरिक्त, इसका उद्देश्य यह पता लगाना भी है कि स्वभूमि की संस्कृति कैसे सूक्ष्म रूप से कार्यशील रहकर वैश्वीकरण के युग में पहचान की बुनावट का हिस्सा बन जाती है।

***

## CONCEPT NOTE

A quick observation is enough to comment that Indian Diaspora has passed through various phases. The journey witnessed spread from pre-historic to brain drain. In 2003 a new era dawned when Diaspora was recognized beyond social and personal peripheries. The success of Diaspora has resulted in connecting with them in an official capacity. Visionary Shri Atal Bihari Vajpayee planned a detailed survey through a High-Level Committee. What followed became history in the Diaspora matters.

Any phase since its migration has not seen such dynamism in the synergy, connect or policy formation by any country for its Diaspora community as India has shown. This has roots in water shades of relations between India with its Diaspora. India took long in recognizing the inherent strength of its Diaspora. The efforts to bring Diaspora back to visit homeland increased after that. Diaspora too came closer and responded, though still attached with personal comfort. However, these realizations have resulted in the formation of several State Units and Ministries for NRIs in the form of Cells and departments with dedicated ministers and secretaries to pay due attention to its native migrants.

A new perspective has shown tremendous progress from both sides. India is to welcome its talent as visitor intelligentsia and give charge of its sensitive organizations, offices, installations, and apprentice. Gone are the days when India would look for White talent and would turn a blind eye from its progeny.

A similar or much more significant change has occurred in the Diaspora community at the same time. Today India has become a favorite destination for Diaspora as a tourist and as a family visit in vacations. India has settled as a pride in the hearts of its Diaspora after a prolonged recession where trust and opportunity alternate to embrace its Diaspora talent.

In changed perspectives, Diaspora today waits for The call from its Homeland and is eager to serve as knowledge partner, trainer, contributor, and professional to be collaborative in the success story of India. Recent past has seen top professionals handling best of Indian offices and steering new thoughts with competitive zeal into the Indian work culture. Be it academic, university, hospital, service sector, technical scope, politics, judiciary or media and entertainment, India has become a destination for Indian Diaspora.

Even Each Indian Diaspora community travels with it's own Cultural Baggage. Sometimes it's also recognized as Cultural Burden. This aspect is the strongest one which unites community across the world. Culture is a composite phenomenon. It has its segments of language, literature, films, food, rituals, religious practices, attire and festivals but not restricted to these. Many forces protect, expand and practice these Cultural traditions and practices. This is how Cultural identities are created. They play a major role in multifunctional aspects of Diaspora. Indian Diaspora is very richly ingrained into Indian Cultural traditions. Need is to bring various Cultural practices under study and evolve various theories, philosophies and trends.

Identity formation is a multifaceted process. It takes place in a socio-historical context. With reference to Diasporas' community sense of belonging to a particular cultural group is very significant. Though the sense of belonging is invisible but it always come forth whenever and where ever question of 'Who am I' emerge.

The proposed seminar will provide an avenue where the socio-historical roots of Diaspora identity will be reinterpreted keeping the legacy of Indian culture in mind. Besides, it also aims to explore how the culture subtly work and become part of identity mosaic in the era of globalization.

***